**SHODH SAMAGAM**

**ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)**

# छत्तीसगढ़ की लोक संस्कृति एवं लोकगीत

**राजेश श्रीवास,** पी.–एचडी., हिन्दी विभाग
सेठ फूलचंद अग्रवाल स्मृति महाविद्यालय, नवापारा–राजिम, रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

**ORIGINAL ARTICLE**

**Author**
**राजेश श्रीवास,** पी.–एचडी.
**E-mail :** dr.rajeshshrivas@gmail.com

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 04/07/2025
Revised on : 05/09/2025
Accepted on : 14/09/2025
Overall Similarity : 00% on 06/09/2025

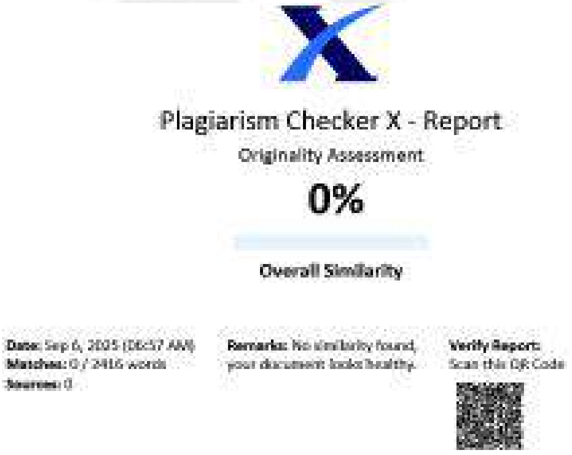


## शोध सार

*छत्तीसगढ़ की संस्कृति को समझने के लिए लोकगीत महत्वपूर्ण घटक है। ग्राम्य जीवन की पूरी झलक इन गीतों में मिलता है। अपनी संप्रेषणीयता के लिए ये चर्चित है। इनकी लोकप्रियता का राज भी यही है। ''वास्तव में ये लोकगीत, लोक संस्कृति के अजस्त्र स्त्रोत है। वे चाहे जिस अंचल के हो उनके लोकतत्व सामान्य है। यही कारण है कि भारत के विभिन्न अंचलों के लोकगीतों में बहुत कुछ समानता पाई जाती है। छत्तीसगढ़ी लोकगीत भारतीय जीवन में व्याप्त लोक जीवन की सुविशल श्रृंखला की ही एक कड़ी है।'' लोकगीत लोक जीवन की अलिखित, व्यवहारिक रचनाएँ है, जो लोक परंपरा से प्रचलित और प्रतिष्ठित होती है। लोकगीतों के रचयिता प्रायः अज्ञात होते है। अतः ये गीत समूहगत रचनाशीलता का परिणाम होते है और ये मौखिक परंपरा में जीवित रहकर युगों की यात्रा करते है। ये गीत, कटुताओं, पर्वो, संस्कारों के अतिरिक्त धर्म और श्रम से भी संबंधित होते है। इजः लोकमन को स्पंदित होकर गुनगुनाने के लिए किसी बंधना या नियम की आवश्यकता नहीं होती है, इसीलिए ये संस्कृति के समग्र संवाहक होते है, जो छत्तीसगढ़ की लोक संस्कृति में रची–बसी है। यही लोक संस्कृति भारत की परम्परा रही है।*

## मुख्य शब्द

*छत्तीसगढ़, लोक संस्कृति, लोकगीत.*

---

छत्तीसगढ़ी लोक साहित्य में लोकगीत सर्वाधिक प्राचीन है। इसका कारण यह है कि लोकगीत मनुष्य के जन्म से ही उसके साथ जुड़े हुए है। शकुंतला वर्मा के शब्दों में –''छत्तीसगढ़ी लोकगीतों की परम्परा इंसान के आदिम युग से चली आ रही है। युगों की छाप उसके भावों पर पड़ी और वह अपने जीवन को ईमानदारी से अपनी बोलियों में प्रकाशित करता हुआ आज भी

परिस्थितियों से संघर्ष करता हुआ चला आ रहा है। उसने समय पर शोषण के विरूद्व अपने गीतों में आवाज उठाई, अपने श्रम का परिहार गीतों के सहारे किया, नया उत्साह, नई लगन गीतों द्वारा प्राप्त की और इतना ही नहीं मन की छिपी हुई मीठी बातों के सुख और दुख को उन्ही गीतों में ढाला।''[1]

छत्तीसगढ़ व्यापक रूप से गाँवों, कस्बों का प्रदेश है। यहाँ की संस्कृति को लोक संस्कृति के रूप में देखा गया है। छत्तीसगढ़ की संस्कृति 'लोक' की संस्कृति है, जो जनजातीय भू–भागों में अपनी पृथक सांस्कृतिक अस्मिता के साथ संरक्षित है। इसके आचार–विचार, रीति–रिवाज, पर्वोत्सव, मूल्य और मान्यताएँ, जीवन–शैली, भाषा, कथाएँ लोक गाथाएँ, लोकनृत्य, लोकगीत, लोकसंगीत, लोकनाट्य, लोकाचरण, लोक देवता, लोकशिल्प और लोकचित्रण का विराट संसार है, जो समष्टि रूप से इस प्रदेश की समग्र वृहत्तम संस्कृति है।

विकास की दृष्टि से भले ही छत्तीसगढ़ प्रथम पंक्तियों में न गिना जाए, किन्तु सांस्कृतिक रूप से यह अंचल निःसंदेह सम्पन्न है। दया, क्षमा, ममता, सरलता एवं सौदर्य यहाँ के लोगों के प्रमुख गुण है। छत्तीसगढ़ अनेक संस्कृतियों को पोषण देता रहा है। जहाँ तक उसकी अपनी संस्कृति का प्रश्न है, वह अपनी आदिम विशेषताओं से अभी भी जुड़ा हुआ है। यहाँ के अधिकांश निवासी प्रकृति पर आस्था रखते है, पर सच तो यह है कि श्रम और ईमान से बढ़कर इनका कोई देवता नहीं है, परंतु तेजी से बदलते आर्थिक, राजनीतिक एवं सामाजिक परिवर्तनों के कारण छत्तीसगढ़ की लोक संस्कृति भी प्रभावित हो रही है।

संस्कृति शब्द सम, उपसर्ग कृ धातु क्विन प्रत्यय से बना है। संस्करण, परिमार्जन इसका अर्थ है। ''वस्तुतः हम श्रेष्ठ विचारों एवं कार्यो को लोक की भूमि में बोकर नई पीढ़ी के लिए उन्नत जीवन मूल्यों की फसल तैयार करते है।''[2] सभ्यता के विकास के क्रम की भाँति संस्कृति का विकास भी वन्य फिर ग्राम हुई। समाज का सार, समाज का दिशा निर्देशन लोक संस्कृति से ही होता है। प्रख्यात साहित्यकार पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी ने लिखा है–''स्नेह की सेवा स्वामीभक्ति की दृढ़ता, विश्वास की सरलता, इसी में तो छत्तीसगढ़ की आत्मा है। जन–जीवन में चरित्र की ऐसी उज्वलता अन्यत्र दुर्लभ है।''[3]

राजेन्द्र प्रसाद शुक्ल ने लिखा है–''हमारी छत्तीसगढ़ी संस्कृति विश्व की प्राचीनतम संस्कृति है। आध्यात्मिक सौन्दर्य, वैचारिक तेजपुंज और शाश्वत नैतिक मूल्यों के कारण हमारी संस्कृति मानव समाज की अमूल्य निधि बन चुकी है। निरंतरता तथा परिवर्तन हमारी संस्कृति की विशेषता है।''[4] किसी क्षेत्र की संस्कृति का सच्चा परिचायक वहाँ का लोक साहित्य है। लोक साहित्य से मलतब लोक–गीत, लोक–नृत्य, लोक–कला, लोकोक्ति आदि से है। लोक साहित्य में लोक–जीवन की अभिव्यक्ति होती है तथा समाज का निर्माण भी करता है। यथा–

''मरत प्यास परदेशी आवे, पीए बर पानी मंगवावै
पानी के ठौर मं दूध पियावै, जाय विदेसी इंहा के
जस ला गात फिरै सब ठौर।''[5]

अतिथि देवोभवः–यह भारत की परम्परा रही है। छत्तीसगढ़ की लोक संस्कृति में यह रची–बसी है। लोक संस्कृति दो शब्दों का समुच्चय है, मगर इसके अंतर्गत कला, साहित्य, गीत, कथा, संगीत, लोकाचार, लोक–व्यवहार, लोक–शिक्षा, लोक–आस्था सब कुछ आ जाता है। लोक संस्कृति का निर्माण सहज ही नही होता, हर पीढ़ी इसमें कुछ न कुछ जोड़ती घटाती चलती है। किसी अंचल को समझने के लिए उसकी लोक–संस्कृति को समझना आवश्यक होता है। अंचल की लोक संस्कृति को समग्र रूप में प्रस्तुत कर पाना कठिन कार्य है। जितना लिखे, कुछ न कुछ अनलिखा, अनकहा रह ही जाता है। जो अंचल जितना पुराना होता है, उसकी संस्कृति भी उतनी ही समृद्व होती है, प्रेरक होती है। लोक संस्कृति का संबंध मुख्यतः ग्रामीण संस्कृति से है। नगरों व महानगरों में लोक संस्कृति की झलक आपको भले ही मिल जाए मगर उसका विशद रूप ग्रामों में ही मिलता है। कलाओं का प्रारंभ जन अपेक्षाओं के अनरूप हुआ। कला जीवन के लिए होना चाहिए। सभी कलाओं का प्रारंभ सभ्यता के विकास के साथ प्रारंभ होता है। कुछ समूह अपनी परंपरागत कलाओं को छोडने को तत्पर नहीं होती। सामान्यतः आदिवासी समूह में यह प्रवृत्ति देखने को मिलती है। छत्तीसगढ़ आदिवासी बहुत क्षेत्र है। अतः यहाँ की संस्कृति में भी प्राचीनता की छाप स्पष्ट दिखती है।

छत्तीसगढ़ प्रकृति और संस्कृति दोनों दृष्टियो से अनुपम है। सुशीलचंद्र वर्मा ने अपने लेख 'यह सुनहरा छत्तीसगढ़' (छत्तीसगढ़ की अस्मिता) में लिखा है – 'भगवान और प्रकृति ने छत्तीसगढ़ को क्या कुछ नही दिया है। मेहनती नर–नारी, नदियाँ, वन, पहाड़, खनिज, उपजाऊ भूमि इत्यादि। कोयला, लोहा, टीन, बाक्साईड, लाइम स्टोन सब कुछ यहाँ है। ऐसे खनिज है जिनका उपयोग अणु से संबंधित चीजों के लिए किया जा सकता है। बिजली के बड़े–बड़े स्त्रोत है। छत्तीसगढ़ एक ऐसा इलाका है जहाँ सागौन और साल दोनों के वन पाए जाते है। सामान्यतः ऐसा नहीं होता। दोनों में से कोई एक होता है। संस्कृति के दृष्टिकोण से भी यह क्षेत्र अमीर है। अगर गीतों और नृत्यों की जानकारी एकत्र की जाए तो संग्रहालय बन जाएगा। करमा, हुल्की, रीलों, मांदरी, छेटका, सुआ, उरांव, सरहुल, टुंडा जैसे जाने कितने अनगिनत नृत्य छत्तीसगढ़ में प्रचलित है। लोक संगीत की विविधता भी चकित कर देती है। इतना सब होने पर छत्तीसगढ़ सुनहरा नहीं तो क्या है।' धन–धान्य, हरहराती वन्य प्रकृति से उपजी परम्परा और निष्कपट जीवन निर्वाह में प्रस्फुटित हुई संस्कृति में जी रहे छत्तीसगढ़ियों का हर दिन एक पर्व है।

छत्तीसगढ़ की संस्कृति को समझने के लिए लोकगीत महत्वपूर्ण घटक है। ग्राम्य जीवन की पूरी झलक इन गीतों में मिलता है। अपनी संप्रेषणीयता के लिए ये चर्चित है। इनकी लोकप्रियता का राज भी यही है।''वास्तव में ये लोकगीत, लोक संस्कृति के अजस्त्र स्त्रोत है। वे चाहे जिस अंचल के हो उनके लोकतत्व सामान्य है। यही कारण है कि भारत के विभिन्न अंचलों के लोकगीतों में बहुत कुछ समानता पाई जाती है। छत्तीसगढ़ी लोकगीत भारतीय जीवन में व्याप्त लोक–जीवन की सुविशाल श्रृंखला की ही एक कड़ी है।''[6] लोकगीत, लोक जीवन की अलिखित, व्यवहारिक रचनाएँ है, जो लोक परम्परा से प्रचलित और प्रतिष्ठित होती है। लोकगीतों के रचयिता प्रायः अज्ञात होते है। वस्तुतः ये गीत समूहगत रचनाशीलता का परिणाम होते है और ये मौखिक परम्परा में जीवित रहकर युगों की यात्रा करते है। ये गीत कुटताओं, पर्वो, संस्कारों के अतिरिक्त धर्म और श्रम से भी संबंधित होते है। वस्तुतः लोकमन को स्पंदित होकर गुनगुनाने के लिए किसी बंधना या नियम की आवश्यकता नहीं होती है, इसीलिए ये संस्कृति के समग्र संवाहक होते है।

छत्तीसगढ़ी लोकगीत, श्रम और साधना के गीत है। छत्तीसगढ़ मूलतः लोकगीत और आख्यान की बोली है इसीलिए पंडवानी, भरथरी, चंदैनी, ढोलामारू, बांसगीत के साथ विभिन्न संस्कार गीत, पर्व गीत, अनुष्ठान गीत, बारहमासा, सुआ, ददरिया, बच्चों के खेल गीत, धनकुल, लक्ष्मी जगार आदि गीतों में लोक कविता और लोक स्वर की छवियाँ अंकित मिलती है। छत्तीसगढ़ के लोकगीतों की गायन शैली में छत्तीसगढ़ी पारंपरिक सांगीतिक विविधता भी मौजूद है। यहाँ छत्तीसगढ़ की कुछ लोकप्रिय गीत–शैलियों का वर्णन किया जा रहा हैः

## छत्तीसगढ़ी संस्कार गीत

### (अ) वैवाहिक संस्कार के गीत

1. चुलमाटी–विवाह आरंभ के समय मिट्टी लाने के नेंग के अवसर पर यह गीत गाया जाता हैः

'तोला माटी कोड़े ल नई आवय मीत धीरे–धीरे।
तोर कनिहा ल ढील धीरे–धीरे।
जतके परोसय, ततके लील धीरे–धीरे।' पृ. 154

2. तेलचघी–जब वर एवं कन्या को तेल, हल्दी लगाया जाता है तब यह गीत गाया जाता हैः

'एक तेल चढ़गे हो
हरियर हरियर
मंड़वा मॅ दुलरू
तोर बदन कुम्हिलाय।' पृ. 154

3. परघनी–बारात स्वागत के समय यह गाया जाता है। इसमें गालियों का भी प्रयोग होता हैः

'आमा पान के बिजना, हालत झूलत आथे रे,
किसबिन के बेटा हर, बारात लेके आथे रे।' पृ. 154

4. भड़ौनी–बारातियों को भोजन के समय हास–परिहास के गीतः

'बने–बने तोला जानेंव समधी
मड़वा में डारेंव बांस रे
झालापाला लुगरा लाने
जरय तुहर नाक रें।' पृ. 164

5. भांवर–विवाह में फेरे के समय यह गाया जाता हैः

'जनम जनम गांठ जोर दे,
ये दोषी जनम जनम गांठ जोर दे।
गांठे गठुरी झनि छुटे
ये दोषी ..........................।' पृ. 162–163

6. टिकावन–विवाह सम्पन्न होने पर नव–दम्पत्ति को उपहार देते समय यह गीत गाया जाता हैः

'ददा मोर टिकथे लिलि हंसा घोड़वा
दाई मोर टिकथे अचहर पचहर
भैया मोर टिकथे, कनक के थार
भौजी टिकथे पइसा चार।' पृ. 167

7. विदाई–विदाई पर गाया जाने वाला गीतः

'अतके दिन बेटी मोर घर रे हे
आज बेटी भये वो बिरान कि हाय जू
आज बेटी भये वो बिरान।' पृ. 169

8. सोहर–बच्चों के जन्म के साथ या पहले गाया जाने वाला जन्म गीत हैः

''धिरे–धिरे बांजथे मोर आनंद बधइया
बाजे अनन्द बधइया हो
मेरो वो ननंदी झन सुनै हो।
अहो ललना मोरो वो ननंदी झन सुनै हो।''[7]

## छत्तीसगढ़ी पर्व–गीत

1. फाग–यह पर्वगीत है जो होली में गाया जाता हैः

'ये हो मोहन खेले होरी,
काकर हाथ मे रंग के कटोरा
काकर हाथ पिचकारी।
राधा के हाथ रंग के कटोरा,
कान्हा के हाथ पिचकारी।' पृ. 295

2. करमा–यह पर्वगीत हैः

'जीयत जनम लेबों हंसि लेबे, खेल लेबे,
फेर ये दुरलभ संसार, के दिन जीवों राम,
जिनगी के नइहें भरोसा।' पृ. 395

3. गौरी–गौरा–शिव–पार्वती संबंधित यह पर्व छत्तीसगढ़ में कार्तिक में मनाया जाता हैः

''आवंर होगै, भांवर होगै, खाइन बरा सोंहारी हो
गौरा–महादेव सामीजी, हमर बाप महतारी हो।।''

–––––

'एक पतरी रैनी झैनी
राय रतन दुर्गा देवी
तोर शीतल छांव माय
जागो गौरी जागो गौरा
जागौ सहर के लोग।'[8] पृ. 193

4. भोजली–भोजली पर्व पर भोजली को विसर्जित करने के लिए जाते समय यह गीत गाया जाता है। भोजली का प्रसिद्व गीत हैः

''महा महर कर भोजली के बाऊत,
जय हो देवी गंगा
देवी गंगा, देवी गंगा, लहर तुरंगा
तुमरों लहर में देवी, भींगे आठों अंगा।''[9]

5. छेरछेरा–छेरछेरा पौष माह की पूर्णिमा को मनाया जाता है। इस अवसर पर बच्चे नई फसल के धान मांगने के लिए घर–घर जाते है और गाते हैः

''छेरछेरा–छेरछेरा माई कोठी के धान ला
हेरत–हेरा।'' पृ. 295

अन्य पर्वगीत है–सरहुल, ककसारपाटा, राई।

## श्रृंगारपरक गीत

1. ददरिया–यह छत्तीसगढ़ का प्रमुख गीत है। यह श्रृंगार प्रधान होता है। ददरिया प्रायः सवाल–जवाब के रूप में गाया जाता है। बैगा आदिवासी इसके साथ नृत्य भी करते हैः

''फुटहा मंदिर म कलस नई ए,
चार दिन के अवैया दरस नई ए।''[10]

ददरिया को छत्तीसगढ़ में प्रेमाभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम कहा जाता है। इसमें नायक–नायिका की अंतर्मन की पीड़ा सवाल जवाब के माध्यम से व्यक्त होती है। इसीलिए ददरिया को छत्तीसगढ़ का आंसु कहा जाय तो अतिश्योक्ति नहीं होगी।

'तरी फतोइ उपर कुरता
राजा रह–रह के आवे तोहर सुरता।' पृ. 309

सोच समझकर मतदान न करने वालों को सचेत करते ददरिया गीत हैः

''धनिया पुदिना मिरचा सोंठ
आगू पाछू ला नइ सोचय डारत हे वोट।''[11]

## नृत्य गीत

1. राउत नाचा–राउत नाचा के समय विभिन्न दोहे गाए जाते है। कुछ अनिवार्यतः होते हैः

'धन गोदानी भुइंया पावौं, पावौं हमर असीस।
नाती पूत ले घर भर जावै जीवौ लाख बरीस।।' पृ. 296

–––––

''जइसन तुम लिहौ दिहौ, तइसन देबों असीस।
'अन्नधन भंडार भरे, तुम जियों लाख बरीस।।''[12]

2. सुआ–यह एक पर्व विशेष का नृत्य–गीत हैः

'तरी नरी ना ना, हो तरी नरी ना ना,
हो सुआ ना,
पंइया परत हो, मैं चंदा सूरूज के
मोला तिरिया जनम झनि देय सुआ रे,
तिरिया जनम मोर अति कलपना रे,
मोला तिरिया जनम झनि दे सुआ रे।' पृ.175

3. करमा–करमा गीतों में बहुत विविधता होती है। ये किसी एक भाग या स्थिति के गीत नहीं है। इसमें दैनिक जीवन की गतिविधि एवं स्थितियों के साथ प्रेम, श्रृंगार का गहरा भाव भी होता हैः

'करम सेमी के आवती,
जानी सुनी पावती
अहो राम घासीघर
लिहे अवतार।' पृ. 210

–––––

'' चोला रोवत हे राम बिन देखे परान।
दादर झांवर झोढ़ी ढूंढौ, डोंगर बीच मंझाय।
सब पतेरन तोला ढूंढौ, कहाँ लुके हे जाय।
चोला रोवत हे राम बिन देखे परान।''[13]

–––––

''उठ उठ करमसेनी पाही गिस बिहान हो।
चल–चल जाबो अब, गंगा असनान हो।''[14]

4. **पंथीः** सतनामी जाति का परम्परागत नृत्य–गीत है। विशेष अवसरों पर सतनामी 'जैतखाम' की स्थापना कर आस–पास गोलाकार आकृति में नाचते गाते है। गायन का प्रमुख विषय गुरू घासीदास का चरित्र होता है। देवदास बंजारे एवं साथियों ने पंथी को कला जगत में प्रतिष्ठित किया है।

'ऐ माटी के काया ऐ माटी के चोला,
कै दिन रहीबे बता दे मोला।'

अन्य नृत्य गीत–राई, गेंड़ी, गौर, सैला, ककसारपाटा, हुलकीपाटा, थापटी।

## निष्कर्ष

छत्तीसगढ़ी के लोकगीतों में यहाँ की मिट्टी की सोंधी महक बसी हुई है तथा वातावरण में इसका स्वर गूंज रहा है। वास्तव में इन गीतों की आत्मा वैयक्तिक न होकर सामूहिक है। यही कारण है कि इनमें पूरे छत्तीसगढ़ के लोगों का प्रेम, टीस, सिहरन, कसक, मादकता, उल्लास, राग–विराग, ईर्ष्या, द्वेष तथा अन्य भाव अभिव्यक्ति पा सकें है। छत्तीसगढ़ी लोकगीत इतिहास के सुदूर काल से चले आते हुए इस प्रवाह में यहाँ के जीवन की संस्कृति, सभ्यता, धार्मिक और आर्थिक स्थितियों का पुरातन एवं सामयिक चित्र एक साथ देखने को मिल जाते है। छत्तीसगढ़ी की मौखिक अभिव्यक्ति के रूप में प्रचलित लोकगीत सामूहिक भावभूमि को लेकर आगे बढ़ते है। इन गीतों में भले ही अनगढ़पन हो, पर इनके साथ लय और स्वर भी है, जो छत्तीसगढ़ की धानी संस्कृति व लोक परम्परा को अपने में समाये हुए है।

## संदर्भ सूची

1. झा, विभाषकुमार; नैयर, सौम्या (2015) *छत्तीसगढ़ समग्र,* छत्तीसगढ़ राज्य हिंदी ग्रंथ अकादमी, कोटा स्टेडियम परिसर, रायपुर (छ.ग.), पृ. 366।
2. बेहार, रामकुमार (2023) *छत्तीसगढ़ का इतिहास,* डॉ.आर.के. बेहार प्रकाशन, रायपुर, (छ.ग), पृ. 303।
3. बेहार, रामकुमार (2023) *छत्तीसगढ़ का इतिहास,* डॉ.आर.के. बेहार प्रकाशन, रायपुर, (छ.ग), पृ. 303।
4. बेहार, रामकुमार (2023) *छत्तीसगढ़ का इतिहास,* डॉ.आर.के. बेहार प्रकाशन, रायपुर, (छ.ग), पृ. 303–304।
5. पाण्डेय, शुकलाल प्रसाद (1972) छत्तीसगढ़ गौरव, मध्यप्रदेश साहित्य परिषद्, भोपाल पृ. 01।
6. बेहार, रामकुमार (2023) *छत्तीसगढ़ का इतिहास,* डॉ. आर.के. बेहार प्रकाशन, रायपुर, (छ.ग), पृ. 309।
7. शुक्ल, दयाशंकर (प्रथम संस्करण) *छत्तीसगढ़ लोकसाहित्य का अध्ययन,* ज्योति प्रकाशन, असम, पृ. 142।
8. देवांगन, रमेशचंद्र (2014) *छत्तीसगढ़ समग्र संदर्भ–प्रतियोगिता सारांश 2014,* ईशिता प्रकाशन, बिलासपुर (छ.ग.), पृ. 295।
9. शुक्ल, दयाशंकर (प्रथम संस्करण) *छत्तीसगढ़ लोकसाहित्य का अध्ययन,* ज्योति प्रकाशन, असम, पृ. 191।
10. देवांगन, रमेशचंद्र (2014) *छत्तीसगढ़ समग्र संदर्भ–प्रतियोगिता सारांश 2014,* ईशिता प्रकाशन, बिलासपुर (छ.ग.), पृ. 295।
11. बेहार, रामकुमार (2023) *छत्तीसगढ़ का इतिहास,* डॉ. आर.के. बेहार प्रकाशन, रायपुर, (छ.ग), पृ. 309।
12. देवांगन, रमेशचंद्र (2014) *छत्तीसगढ़ समग्र संदर्भ–प्रतियोगिता सारांश 2014,* ईशिता प्रकाशन, बिलासपुर (छ.ग.), पृ. 280।
13. शुक्ल, दयाशंकर (प्रथम संस्करण) *छत्तीसगढ लोकसाहित्य का अध्ययन,* ज्योति प्रकाशन, असम, पृ. 211।
14. बेहार, रामकुमार (2023) *छत्तीसगढ़ का इतिहास,* डॉ. आर.के. बेहार प्रकाशन, रायपुर, (छ.ग), पृ. 311।

********